



# दलहन समाचार



भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

प्रवेशांक

जुलाई-दिसम्बर, 2007

## विषय वस्तु

नये उप महानिदेशक	2
राष्ट्रीय संगोष्ठी	2
नूतन प्रजातियाँ	3
अरहर में टिड्डे का प्रकोप	3
स्थापना दिवस	4
रबी वार्षिक समूह बैठक	4
हिन्दी दिवस	5
कृषक-गोष्ठी	5
किसान मेला	6
रबी दलहन प्रशिक्षण	6
सामयिकी	7
कृषि-उर्वशी	7
दक्षता परक प्रशिक्षण	7
निदेशक की कलम से	8

## संपादक मण्डल

डा. मसऊद अली, अध्यक्ष  
डा. राम गणेश चौधरी  
डा. सुशील कुमार सिंह  
डा. संजीव गुप्ता  
श्री दिवाकर उपाध्याय, सदस्य सचिव



डा. मंगला राय  
सचिव एवं महानिदेशक

DR. MANGALA RAI  
SECRETARY & DIRECTOR-GENERAL



## सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान द्वारा हिन्दी में **दलहन समाचार** का प्रकाशन आरम्भ किया जा रहा है जिसमें किसानोपयोगी एवं हस्तांतरणीय तकनीकी विकास एवं परिमार्जन संबंधी समाचारों का प्रकाशन किया जा रहा है। शोध परिश्रम और परिणाम की सार्थकता इसी में है कि वह किसानों तक उन्हीं की भाषा में पहुँचे, जिससे किसान प्रभावित और प्रेरित होकर उस तकनीकी को अपनाएं।

मुझे आशा है कि **दलहन समाचार** किसानों और दलहन विकास कार्यकर्ताओं में लोकप्रिय होगा और दलहन उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। मैं इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

3 दिसम्बर, 2007

*(मंगला राय)*

## डा. पी.एल. गौतम नये उप महानिदेशक (फसल विज्ञान)



डा. पी.एल. गौतम ने दिनांक 12 अक्टूबर, 2007 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली में उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) का पदभार ग्रहण किया। दिसम्बर 12, 1947 को जन्में डा. गौतम ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से आनुवंशिकी में डाक्टरेट की उपाधि ग्रहण की थी। अपने इस नये दायित्व से पूर्व डा. गौतम पंतनगर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति थे। डा. गौतम, वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन (हिमाचल प्रदेश) में निदेशक शोध और फिर वानिकी कालेज के अधिष्ठाता भी रहे हैं। डा. गौतम उत्तरांचल बीज एवं तराई विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक भी रहे हैं।

डा. गौतम ने विभिन्न फसलों की अनेक प्रजातियों के विकास में अपना योगदान दिया है। राष्ट्रीय जीन बैंक को समृद्ध करने में आपकी महती भूमिका रही है। डा. गौतम शोध एवं विकास तथा नीतिगत मामलों से संबंधित अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य रहे हैं। दुनिया भर के अनेक देशों में विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय बैठकों में डा. गौतम ने देश का प्रतिनिधित्व किया है।

ऐसे विख्यात कृषि वैज्ञानिक, शोध प्रबन्धक और सफल योजनाकार डा. गौतम का नये उप महानिदेशक के रूप में संस्थान स्वागत करता है और आशा करता है कि आपके कुशल नेतृत्व में देश में दलहनों का उत्पादन बढ़ेगा और दलहन उत्पादक किसान खुशहाल होंगे।

## द्विदलीय फसलों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान में दिनांक 3-5 नवम्बर, 07 को “पर्यावरण के टिकाऊपन में द्विदलीय फसलें : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ” विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी का आयोजन संस्थान एवं भारतीय दलहन शोध एवं विकास समिति के संयुक्त तत्वाधान एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, तथा इक्रीसेट और इकार्डा जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के सहयोग से किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रो. चन्द्रिका प्रसाद, महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद्, मुख्य अतिथि थे तथा इसकी अध्यक्षता डा. पी.एल. गौतम, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भा.कृ.अनु. परिषद् ने की। अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. प्रसाद ने भारतीय कृषि के टिकाऊपन में द्विदलीय फसलों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भविष्य में कृषि के विकास के लिए विभिन्न फसल पद्धतियों में द्विदलीय फसलों का समावेश ज़रूरी है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डा. गौतम ने वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे दलहनी फसलों को सम्मिलित करते हुए फसल पद्धतियों का बहु-फसलीय विविधीकरण करने की रणनीति बनायें और ऐसा तन्त्र विकसित करें जिससे अधिसंख्य जनसंख्या को भरपेट और पौष्टिक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। आयोजन समिति के अध्यक्ष डा. मसऊद अली ने अपने संबोधन में पर्यावरण पर दलहनों के प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि द्विदलीय फसलों में विशिष्ट गुण होते हैं जो मृदा एवं जल संरक्षित करते हैं, मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों में सुधार लाते

हैं, लागतों की भरपूर दोहन क्षमता में वृद्धि करते हैं और कुल मिला कर उपज में वृद्धि करते हैं।

इस संगोष्ठी में देश और विदेश से आये हुए लगभग 350 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इनमें डा. जे.डी.एच. कीटिंग, उप महानिदेशक (शोध), इक्रीसेट; डा. एम.सी. सक्सेना, पूर्व सहायक महानिदेशक, इकार्डा; डा. आर.बी. देशमुख, कुलपति, मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, राहुरी; डा. वी.डी. पाटिल, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), भा.कृ.अनु.परिषद्; प्रो. डगलस आर. कुक, कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस; प्रो. एस. कनइय्यन, अध्यक्ष, राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण; डा. ए. सुब्बारॉव, निदेशक, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान; डा. शंकर लाल, पूर्व निदेशक, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, आदि प्रमुख थे।



संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में वैज्ञानिक परिचर्चाएं हुईं। फसल विविधीकरण, बदलते हुए मौसम में फसल अनुकूलन, प्राकृतिक स्रोत प्रबंधन, जैव एवं अजैव प्रतिबल प्रबन्धन, पादप विविधताओं का टिकाऊ प्रबन्धन, आनुवंशिक उन्नयन, प्रयुक्त जीनोमिक्स, ट्रान्सजेनिकस एवं जैव संरक्षा, सहभागिता तकनीकी विकास, बौद्धिक संपदा अधिकार तथा नीति विषयक सत्रों में 45 विशिष्ट एवं ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों द्वारा विचारोत्तेजक व्याख्यान दिये गये। इसके अतिरिक्त पोस्टरों के माध्यम से 190 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। अधिकांश प्रस्तुतियों में पर्यावरणीय टिकाऊपन में द्विदलीय फसलों की भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

## दलहनी फसलों की नूतन प्रजातियाँ

वैज्ञानिकों के निरन्तर प्रयासों से विभिन्न दलहनी फसलों की नई उन्नत प्रजातियों का विकास किया है। हाल में ही सम्पन्न दलहन की वार्षिक समूह बैठकों में निम्नलिखित प्रजातियाँ विभिन्न क्षेत्रों के लिए चिन्हित की गई हैं :-

### मूँग

**एम.एच. 2-15 (सत्या)** : मूँग की यह प्रजाति पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खरीफ में बुआई हेतु चिन्हित की गई है। पीली चित्तेरी विषाणु रोग के प्रति मध्यम अवरोधिता गुण युक्त इस प्रजाति की औसत उत्पादकता 1055 कि.ग्रा./हेक्टेयर है।

**यू.पी.एम. 02-17** : मूँग की यह नई प्रजाति असम, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा एवं मिजोरम के लिए प्रथम चिन्हित प्रजाति है। इसकी औसत उत्पादकता 1052 कि.ग्रा./हेक्टेयर है।

### अरहर

**टी.टी. 401** : अल्पकालिक अरहर की यह नई प्रजाति मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के लिए चिन्हित की गई है। बड़े दाने वाली इस प्रजाति की औसत उत्पादकता 1570 कि.ग्रा./हेक्टेयर है, जो लोकप्रिय प्रजाति यू.पी.ए.एस. 120 से 21% अधिक है।

### चना

**जी.एन.जी. 1581** : चना की यह नई प्रजाति राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा जम्मू के मैदानी क्षेत्रों के लिए चिन्हित की गई है। इसके दाने पीले रंग के, आकर्षक तथा मध्यम

आकार के (16 ग्राम/100 दाने) हैं। 151 दिन में पकने वाली इस प्रजाति की औसत उत्पादकता 2400 कि.ग्रा./हेक्टेयर है। यह प्रजाति उकठा, झुलसा तथा स्टंट विषाणु के प्रति अवरोधिता गुणयुक्त है।



### मटर

**आई.पी.एफ. 04-26** : मटर की यह प्रजाति राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा जम्मू के मैदानी क्षेत्रों के लिए चिन्हित की गई है। चूर्णी कवक रोग प्रतिरोधी इस प्रजाति की औसत उत्पादकता 2157 कि.ग्रा./हेक्टेयर है, जो अन्य लोकप्रिय प्रजाति डी.एम.आर. 7 से 18% अधिक है।



**वी.एल. 45** : उत्तर पर्वतीय क्षेत्र के लिए चिन्हित मटर की इस नई प्रजाति की औसत उत्पादकता 1421 कि.ग्रा./हेक्टेयर है जो लोकप्रिय प्रजाति डी.एम.आर. 7 की तुलना में 47% अधिक है। यह प्रजाति उकठा रोग के प्रति अवरोधिता गुणयुक्त है।

**पन्त पी. 42** : मटर की यह नई प्रजाति राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा जम्मू के मैदानी क्षेत्रों के लिए चिन्हित की गई है। चूर्णी कवक रोगरोधी इस प्रजाति की औसत उत्पादकता 2219 कि.ग्रा./हेक्टेयर है, जो लोकप्रिय प्रजाति डी.एम.आर. 7 से 21% अधिक है।

## अगेती अरहर में टिड्डे का प्रकोप

अरहर भारत की प्रमुख दलहनी फसल है। यह वर्षा ऋतु में अधिक समय तक खेत में खड़ी रहती है। इसलिये इस पर



प्रारम्भिक अवस्था से ही कीड़ों का प्रकोप होता है, पर ये कोई आर्थिक क्षति नहीं पहुँचाते हैं। परन्तु फूल और फली बनने की अवस्था में लगने वाले कीड़े आर्थिक क्षति पहुँचाते हैं। इनमें प्रमुख हैं चना फली भेदक और फली मक्खी। लेकिन इस वर्ष कानपुर देहात (मंथना ब्लाक के गाँव-पारा प्रतापपुर) में अगेती अरहर (किसान

श्री श्रवण कुमार पाण्डे, जुलाई 2007, किस्म-स्थानीय) में पहली बार टिड्डे का प्रकोप पाया गया। ये टिड्डे अरहर के पौधे के बीच के भाग के तनों को खुरच-खुरच कर छाल और फ्लोयम को खाते हैं। देखने पर ऐसा लगता है कि किसी ने चाकू से तनों को छील दिया है। इनके खाने से तना सूख जाता है और उसी जगह से टूट जाता है। जिससे ऊपर की शाखायें मय फूल, फली एवं पत्तियों के बिल्कुल सूख जाती हैं। साधारणतया टिड्डे हरी पत्तियाँ खाते हैं पर ये अरहर की पत्तियों को बिलकुल नहीं खाते हैं। इसके प्रकोप से 8 से 10 प्रतिशत पौधे खेत में सूख गये। टिड्डे का प्रकोप अरहर में पहली बार पाया गया है।

हेम सक्सेना एवं पी. दुरुई मुरुगन

## संस्थान का स्थापना दिवस समारोह

संस्थान का 15वां स्थापना दिवस 5 सितम्बर, 2007 को धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गये। मुख्य कार्यक्रम में कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग, कृषि मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सचिव श्री अनिल कुमार उपाध्याय मुख्य अतिथि थे। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार सूरी तथा संस्थान के पूर्व निदेशक डा. सतीश चन्द्रा इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता डा. नरेन्द्र कुमार त्यागी, सदस्य, कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल ने की। समारोह का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि ने संस्थान द्वारा थोड़े ही समय में प्राप्त की गई उपलब्धियों की प्रशंसा की और वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि दलहन उत्पादन की ऐसी तकनीकी विकसित करें जिससे देश में दलहन उत्पादन में दोगुनी वृद्धि की जा सके। उन्होंने शोध एवं तकनीकी विकास के फल को गाँवों में किसानों तक पहुँचाने के लिए प्रसार तंत्र को भी प्रभावी ढंग से कार्यशील बनाने पर बल दिया। श्री उपाध्याय ने देश में दलहन उत्पादन के विषय में केन्द्र सरकार की सक्रियता पर चर्चा करते हुए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत दलहन उत्पादन बढ़ाने के लिए उठाये गये त्वरित प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर प्रो. सूरी ने दलहनों में प्रोटीन एवं खनिजों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु प्रजनन प्रयासों पर बल दिया। पूर्व निदेशक



डा. सतीश चन्द्रा ने संस्थान की प्रगति पर हर्ष प्रकट करते हुए कहा कि कृषि विकास में 4% की वृद्धि दर प्राप्त करने के लिए दूसरी हरितक्रांति की आवश्यकता है और यह बाराणी क्षेत्रों में ही संभव होगा, जहाँ दलहन मुख्य फसल हैं। कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल के डा. त्यागी ने दलहनी फसलों में आ गये उत्पादकता ठहराव और अवरोध को समाप्त करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने समस्याग्रस्त मृदाओं जैसे अजैव प्रतिबलों के प्रति सक्षम प्रजातियों के विकास के लिए आह्वान किया तथा संस्थान की प्रगति की प्रशंसा की।

अतिथियों का सम्मान करते हुए निदेशक डा. मसऊद अली ने विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त संस्थान की उपलब्धियों के विषय में विस्तार से बताया और शोध के नये क्षेत्रों जैसे ट्रांसजेनिक्स, जिनोमिक्स, जीन पिरामिडिंग, संकर प्रजनन, एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन, कटाई उपरान्त प्रौद्योगिकी आदि में प्रगति की जानकारी दी।

इस अवसर पर कानपुर, फतेहपुर तथा आसपास के अन्य जनपदों से आये हुए किसानों ने कृषक गोष्ठी तथा किसान-वैज्ञानिक परिचर्चा में भाग लिया। इसमें दलहन उत्पादन संबंधी किसानों की समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान विशेषज्ञ वैज्ञानिकों द्वारा सुझाया गया। मुख्य अतिथि द्वारा “रोजगार सृजन के लिए आई.आई.पी.आर. दाल मिल” तथा “दलहन भण्डारण में प्लास्टिक बोरो के उपयोगिता” नामक दो नये प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया।

## रबी फसलों की वार्षिक समूह बैठक

रबी दलहनी फसलों यथा चना, मसूर, मटर, राजमा, खेसारी, मूंग तथा उर्द पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं की वार्षिक बैठक का आयोजन 8-10 सितम्बर, 2007 को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची में किया गया।

इस बैठक में डा. वी.डी. पाटिल, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), डा. एन.डी. जाम्बले, सहायक महानिदेशक (बीज), डा. ए.के. सरकार, अधिष्ठाता (कृषि), बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, सहित देश के विभिन्न संस्थानों तथा कृषि विश्वविद्यालयों के लगभग 175 कृषि वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस बैठक का उद्घाटन बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एन.एन. सिंह ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में डा. सिंह ने कहा कि भारत दुनियाँ में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है तथा साथ ही सबसे बड़ा आयातकर्ता भी है। उन्होंने दलहनी फसलों का क्षेत्र बढ़ाने के लिये झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में अल्प अवधि वाली प्रजातियों को लोकप्रिय बनाने पर जोर दिया।

परिषद् के उप महानिदेशक डा. एस.पी. तिवारी ने कहा कि वैज्ञानिकों के प्रयास से दलहनी फसलों की लगभग 450 उन्नतिशील प्रजातियाँ विकसित की गयी हैं। परन्तु उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिये उन्नतिशील प्रजातियों के साथ-साथ समुचित प्रबन्धन पर भी ध्यान देना होगा। दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु भारत सरकार भरपूर आर्थिक सहयोग दे रही है जिसका लाभ उठाना चाहिये। संस्थान के निदेशक डा. मसऊद अली ने दलहन अनुसंधान रणनीति की प्राथमिकताओं पर प्रकाश डाला। डा. बी.बी. सिंह, परियोजना निदेशक (मुलार्प) और डा. एन.पी. सिंह, परियोजना निदेशक (चना) ने सम्बन्धि फसलों की शोध प्रगति आख्या प्रस्तुत की। आगामी सत्र के लिए तकनीकी कार्यक्रम निर्धारित किया।

उत्कृष्ट शोध हेतु जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर तथा महात्मा फूले कृषि विश्वविद्यालय, राहुरी के चना वैज्ञानिकों को इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। इस कार्यशाला में चना की जी.एन. जी. 1581, मटर की वी.एल. 45, आई.पी.एफ. 4-26 तथा पन्त मटर 42 प्रजातियों को चिन्हित किया गया।



## हिन्दी दिवस आयोजित

संस्थान में हिन्दी दिवस समारोह दिनांक 20 सितम्बर, 2007 को मनाया गया। डा. अमर नाथ तिवारी, अधिष्ठाता, कृषि संकाय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर इस समारोह के मुख्य अतिथि और श्री सैयद मेहताब हैदर, उत्तर प्रदेश हथकरघा विकास निगम, लखनऊ विशिष्ट अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता डा. मसऊद अली, निदेशक ने की। समारोह में संस्थान के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एवं सहायक वर्ग के कर्मचारियों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में हिन्दी को अपनाने पर जोर देकर कहा कि इसकी शुरुआत घर से ही होनी चाहिए। निजी कार्यों और सरकारी कामकाज में भी हिन्दी का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है। जितना अधिक हम अपनी भाषा में सोच कर व्यक्त करते हैं वह उतना ही अधिक स्पष्ट और प्रभावी होता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'दलहन आलोक' का विमोचन किया तथा इस पुस्तिका में उत्कृष्ट लेखों के लिए लेखकों को पुरस्कृत भी किया। प्रसिद्ध कवि एवं शायर श्री सैयद मेहताब हैदर ने हिन्दी के योगदान की चर्चा करते हुए इस अवसर पर हृदयस्पर्शी गीत और गज़ल भी



प्रस्तुत की। इस अवसर पर डा. मसऊद अली, निदेशक ने कहा कि अभी तक सोच यही थी कि वैज्ञानिक एवं अनुसंधान कार्यों के लिए विदेशी भाषा पर निर्भरता ज़रूरी है किन्तु अब यह स्थिति नहीं है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यदि प्रयास किया जाए तो हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन कठिन नहीं है। संस्थान में अनेक तकनीकी पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान द्वारा हिन्दी में अर्धवार्षिक समाचार पत्र के प्रकाशन करने की भी घोषणा की।

हिन्दी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए। दलहन आलोक में उत्कृष्ट कविता लेखन के लिए फतेहपुर जिले के मौहार गाँव के प्रगतिशील किसान श्री रजवन्त गौतम को पुरस्कृत किया गया। हिन्दी टिप्पण लेखन, हिन्दी टंकण, वाद-विवाद एवं हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में श्रीमती मीनाक्षी वाष्णेय, श्री ब्रह्म प्रकाश एवं अन्य कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यकलापों एवं उपलब्धियों की रिपोर्ट डा. संजीव गुप्ता ने प्रस्तुत की।

## कृषक-गोष्ठी का आयोजन

आदर्श बीज पद्धति परियोजना के अन्तर्गत संस्थान द्वारा उत्तर प्रदेश के फतेहपुर व कानपुर देहात जिलों में अगेती अरहर (यू.पी.ए. एस. 120) तथा दीर्घकालीन अरहर (बहार एवं नरेन्द्र अरहर 1) का बीज उत्पादन कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके तहत फतेहपुर जिले के ग्राम पहर, मौहार एवं हरदौरपुर के 135 किसानों के साथ 31 हे. प्रक्षेत्र बीज उत्पादन के लिए चयनित है। इसी तरह कानपुर देहात के ग्राम बारापुर एवं सरियापुर के 84 किसानों से कुल 19.8 हे. प्रक्षेत्र पर अरहर का बीज उत्पादन कराया जा रहा है। कार्यक्रम में कृषकों की भागीदारी तथा बीज उत्पादन की स्थिति की जानकारी हेतु 6 तथा 7 नवम्बर 2007 को क्रमशः ग्राम पहर (फतेहपुर) एवं बारापुर (कानपुर देहात) में कृषक बैठक का आयोजन किया गया।

परियोजना समन्वयक तथा इक्रीसेट, हैदराबाद में प्रधान वैज्ञानिक डा. एस.एन. निगम, क्षेत्रीय प्रबन्धक राष्ट्रीय बीज निगम, श्री एम.एल. वर्मा, संस्थान के वैज्ञानिक तथा परियोजना के सहयोगियों ने इस बैठक



में हिस्सा लिया। इस बैठक में डा. एस.के. सिंह, उप परियोजना समन्वयक ने पूरे कार्यक्रम की प्रगति का ब्योरा प्रस्तुत किया। वर्तमान में चल रहे अरहर के बीज उत्पादन कार्यक्रम के बारे में डा. निगम ने किसानों की राय ली। किसानों ने भी खेतों में फसल की दशा (खासकर उपास 120 अल्प अवधि प्रजाति) पर संतुष्टि जाहिर की। इस बात की पुष्टि सामूहिक भ्रमण के दौरान हुई जब यह पाया गया कि अगेती अरहर अपनी परिपक्वता के करीब थी।

दीर्घकालीन अरहर (बहार एवं नरेन्द्र अरहर 1) पर चर्चा के समय कृषकों ने बताया कि जुलाई, 2007 में फतेहपुर जिले में लगातार वर्षा तथा कानपुर देहात में सूखे की लम्बी अवधि के कारण फसल की बुवाई प्रभावित हुई। यद्यपि बुवाई के 110-120 दिन बाद की प्रथम सिंचाई से फसल अपनी स्वस्थावस्था को पा चुकी थी। किसानों को सलाह दी गई कि वे अपने खेतों से अवांछित अरहर के पौधों को यथाशीघ्र उखाड़कर फेंक दें ताकि मानक अनुरूप गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन किया जा सके।

## किसान मेले में भागीदारी

संस्थान ने चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी 3-7 अक्टूबर, 2007 में हिस्सा लिया। कृषि शोध एवं शिक्षा राज्य मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार, श्री योगराज सिंह ने संस्थान के स्टाल का भ्रमण कर दलहन उत्पादन बढ़ाने में भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के प्रयासों को सराहा। इस मेले में किसानों, महिला कृषकों एवं उद्यमियों के लिए दलहन उत्पादन, सुरक्षा, मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण सम्बन्धित उन्नत व नयी तकनीकी को पोस्टर, फोटो, चार्ट एवं जीवित नमूनों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। दलहनी फसलों-



खासकर खरीफ फसलों की उन्नत किस्में किसानों के आकर्षण का केन्द्र रहीं। संस्थान द्वारा विकसित चना, मटर एवं राजमा के उन्नत प्रजातियों के बीज की खरीदारी में किसानों ने काफी उत्साह दिखाया। इसके अतिरिक्त किसानों ने मेले में उपस्थित संस्थान के वैज्ञानिकों से दलहन उत्पादन से सम्बन्धित समस्याओं पर भी चर्चा की। संस्थान द्वारा विकसित कृषकों के लिए ज्ञानोपयोगी साहित्य जैसे दलहन प्रश्नोत्तरी, बुलेटिन, फोल्डर इत्यादि का वितरण किया गया। आई.आई.पी.आर. को 'सर्वोत्तम स्टाल' के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

## रबी दलहन उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण

कृषि मंत्रालय भारत सरकार के कृषि एवं सहकारिता विभाग के वित्तीय सहयोग से संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर का "रबी दलहन उत्पादन तकनीक" पर प्रशिक्षण 17 सितम्बर से 24 दिसम्बर, 2007 तक आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में देश के 12 राज्यों से 18 कृषि पदाधिकारियों (संयुक्त निदेशक, उपनिदेशक, कृषि प्रसार व जिला कृषि अधिकारी) ने भाग लिया। इस आठ दिवसीय प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य भाग ले रहे पदाधिकारियों के व्यावहारिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी तथा तकनीकी दक्षता में सुधार करना था। प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों ने रबी दलहनी फसलों के उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे क्षेत्र के उपयुक्त दलहन की उन्नत किस्में, उन्नत तकनीक जैसे पोषक तत्व, जल एवं मृदा प्रबंधन, जैविक खाद की महत्ता एवं

उपयोग विधियों पर जोर दिया गया। कृषि अधिकारियों को कीट एवं रोग तथा सूत्रकृमि प्रबन्धन, भण्डारण के दौरान कीट प्रबंधन तथा दालों के प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन जैसे विषयों पर जानकारी दी गई। प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान द्वारा क्रियान्वित आइसोपाम पोषित 'आदर्श बीज पद्धति परियोजना' के भागीदार किसानों के साथ परिचर्चा एवं प्रक्षेत्र भ्रमण कराया गया।



## पुरस्कार/सम्मान

दिनांक 3-5 नवम्बर, 2007 को आयोजित द्विदलीय फसलों पर राष्ट्रीय सम्मेलन में दलहनी फसलों पर शोध कार्यों में उल्लेखनीय योगदान हेतु निम्नलिखित वैज्ञानिकों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया :

### आई.एस.पी.आर.डी. गोल्ड मेडल



प्रो. चन्द्रिका प्रसाद, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद्, लखनऊ



डा. आर.वी. देशमुख, कुलपति, महात्मा फूले कृषि विश्वविद्यालय, राहुरी



डा. मसऊद अली, निदेशक, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

### आई.एस.पी.आर.डी. रिकॉगनीशन अवार्ड

संगोष्ठी में विख्यात वैज्ञानिक डा.सी.एल.एल. गोबड़ा, डा.पी.एम.गौड़ा, डा. सी. श्रीनिवासरॉव, डा.एस.एस. जुडेजा, डा.सी. दुराई राज एवं डा. रज़ी अहमद को आई.एस.पी.आर.डी. रिकॉगनीशन अवार्ड से दलहन शोध में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

दिनांक 5 सितम्बर 2007 को आयोजित संस्थान के 15वें स्थापना दिवस समारोह में वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक संवर्गों में क्रमशः डा. सैय्यद शराफत अली, प्रधान वैज्ञानिक (सूत्रकृमि विज्ञान), श्री जगदीश नारायण कटियार, प्रक्षेत्र प्रबन्धक एवं श्री राजेन्द्र सिंह, सहायक प्रशासनिक अधिकारी को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।

## सामयिकी - फसल सुरक्षा

### जनवरी से मार्च अरहर

1. फली भेदक की सामयिक जानकारी हेतु यौन आकर्षण जाल (4-5 जाल/हे.) लगायें जब 4-5 पतंगे प्रति जाल/दिन मिलने लगें तो कीट नियंत्रण की तैयारी करें।
2. प्रथम छिड़काव इन्डोसल्फान 0.07% तथा 15 दिन के अंतराल पर द्वितीय छिड़काव 0.03% डाइमिथोएट का करके फलीभेदक के सत का छिड़काव करें।
3. अगर उपलब्ध हो तो 250-350 गिडार समतुल्य एन.पी.वी. विषाणु का छिड़काव करें।
4. उकठा से ग्रसित पौधों को जड़ सहित उखाड़ कर जला दें।

### चना :

1. खेतों का साप्ताहिक भ्रमण कर फली भेदक के प्रकोप पर नज़र रखें और यौन आकर्षण जाल लगा कर पतंगों के आने पर निगरानी रखें।
2. फली भेदक से बचाव के लिए टी आकार के बांस अथवा लकड़ी के बने 35-40 अड्डे/हे लगाये जिन्हें दाना कड़ा होते ही हटा दें।
3. प्रकोप होने पर निबौली के सत, एन. पी.वी अथवा 0.07% इन्डोसल्फान का छिड़काव करें।

### मसूर :

1. रतुआ का प्रकोप दिखाई देते ही घुलनशील गंधक 0.2% अथवा मैकोजेब 0.25%

का घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर दूसरा छिड़काव 10 दिन बाद करें।

2. माहू का प्रकोप होने पर डाइमिथोएट 0.03%, डायमेक्रान 0.02% अथवा मिथाइल डेमेटान 0.05% का एक छिड़काव करें।
3. फलीभेदक के नियंत्रण हेतु इन्डोसल्फान 0.07%, मोनोक्रोटोफास 0.04%, प्रोफैनोफास 0.04% अथवा निबौली के 5% सत् का छिड़काव करें।

### मटर

1. रतुआ और चूर्णिल आसिता के प्रबन्धन हेतु 0.03% घुलनशील गंधक अथवा 0.2% मैकोजेब का छिड़काव करें। गहरी सिंचाई से बचें।
2. फलीभेदक का प्रबन्धन मसूर में दी गई विधि से करें।

### अप्रैल से जून :

#### उर्द/मूंग

1. पीत चितेरी रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें।
2. श्वेत मक्खी के नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफास 0.04% का छिड़काव करें।
3. फूल आने पर थ्रिप्स के रोकथाम के लिए डाइमिथोएट 0.03%, मोनोक्रोटोफास 0.04% अथवा इन्डोसल्फान 0.07% के घोल का छिड़काव करें।

## कृषक की जुबानी : कृषि-उर्वशी

जो दलहन की फसलें उगाईं न होती।  
कृषि उर्वशी बन के आईं न होती।।

दही के बड़े लोग कैसे बनाते।  
मुंगौरे-पकौड़ी कहां कैसे पाते।।  
चने, उर्द की दाल फ्राईं न होती।  
कृषि उर्वशी बन के आईं न होती।।

बताओ हमें कैसे बूंदी बनाते।  
न बेसन के लड्डू का हम स्वाद पाते।  
इमरती सरीखी मिठाईं न होती।  
कृषि उर्वशी बन के आईं न होती।।

न मिलती कहीं फिर हमें भेलपूरी।  
मटर के बिना चाट होती अधूरी।  
तो अम्मा ने खिचड़ी बनाईं न होती।  
कृषि उर्वशी बन के आईं न होती।।

हजारों तरह की न नमकीन होती।  
न इतनी सुलभ सबको प्रोटीन होती।  
रसोई में दालें पकाईं न होती।  
कृषि उर्वशी बन के आईं न होती।।

उगाओ उर्द मूंग अरहर की खेती।  
ये दलहन की फसलें हैं धन-स्वास्थ्य देती।  
जो इसमें हमारी भलाईं न होती।  
कृषि उर्वशी बन के आईं न होती।।

नगर में न दलहन का संस्थान होता।  
न दलहन के बीजों का संज्ञान होता।  
तो गौतम ने कविता सुनाईं न होती।  
कृषि उर्वशी बन के आईं न होती।।

रजवंत सिंह गौतम

## दक्षता परक प्रशिक्षण व कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा

संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर 5 सितम्बर, 2007 को किसानों के लिए दक्षतापरक प्रशिक्षण एवं कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कानपुर देहात एवं कानपुर नगर के 168 किसानों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान किसानों को गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन के महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे बुआई के पूर्व बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना, फलीभेदक के प्रबन्धन के लिए जैविक नियन्त्रण तकनीक अपनाना, दलहनी फसलों में उकठा बीमारी के प्रबन्धन हेतु ट्राइकोडर्मा का इस्तेमाल करना,

इत्यादि पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। किसानों को यह भी बताया गया कि गुणवत्ता बीज उत्पादन के महत्वपूर्ण मानक कौन-कौन से हैं तथा उन्हें वैज्ञानिक तरीकों से कैसे किया जा सकता है। प्रशिक्षण के पश्चात् कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा में किसानों ने सम-सामयिक दलहन उत्पादन सम्बन्धित समस्याओं को वैज्ञानिकों के सामने रखा। किसानों को संस्थान के तकनीक पार्क का भ्रमण कराया गया जहाँ उन्हें खरीफ की दलहनी फसलों जैसे मूंग, उर्द एवं अरहर की उन्नत प्रजातियों एवं वैज्ञानिक उत्पादन तकनीक को देखने का अवसर मिला। संस्थान द्वारा प्रकाशित फसल उत्पादन एवं फसल सुरक्षा सम्बन्धित कृषकोपयोगी प्रसार साहित्य का किसानों में वितरण किया गया।



## निदेशक की कलम से



भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान एवं अखिल भारतीय समन्वित दलहन सुधार परियोजनाओं से जुड़े वैज्ञानिकों के शोध प्रयासों से विभिन्न दलहनी फसलों की नूतन प्रजातियों और उत्पादन तकनीकी का विकास किया गया है और उसमें निरन्तर परिमार्जन एवं सुधार किया जाता रहता है। किन्तु इन सबके परिणाम और लाभ वास्तविक उपभोक्ता यानी किसानों तक समुचित तरीके से नहीं पहुँच पाते हैं। विभिन्न शोध प्रक्षेत्रों और अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में प्राप्त उत्पादन एवं किसानों के खेतों में प्राप्त उपज के अन्तर से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि या तो किसान उन्नत तकनीकी को जानते नहीं हैं या उसे सार्थक रूप से अपना नहीं पाते हैं। उत्पादन एवं उत्पादकता के इसी अन्तर को कम करने के उद्देश्य से संस्थान ने यह सार्थक पहल की है कि किसानों को उन्हीं की भाषा में यह तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराई जाये।

**दलहन समाचार** में किसानोपयोगी एवं हस्तान्तरणीय तकनीकी विकास एवं परिमार्जन सम्बन्धी समाचारों का प्रकाशन किया जायेगा। इसमें नूतन प्रजातियों का विकास, समय-समय पर आयोजित किसान मेला एवं किसान गोष्ठियों के समाचार, दलहनी फसलों में समसामयिक क्रियाओं की जानकारी तथा अनुमोदित तकनीकी का प्रकाशन किया जायेगा। संस्थान का यह प्रयास होगा कि यह प्रकाशन परस्पर सूचना एवं संवाद का माध्यम बने। इसलिए पाठकों/ कृषकों द्वारा भेजे गये क्षेत्र विशेष में दलहन उत्पादन सम्बन्धी कठिनाइयों और समस्याओं का निराकरण भी आगामी अंकों में दिया जायेगा। इससे इसकी उपयोगिता बढ़ेगी। हमारा पूरा प्रयास रहेगा कि किसान नूतन तकनीकी को पूरी तरह समझ कर, उससे प्रभावित होकर प्रेरित हों और उसे अपनायें।

मुझे विश्वास है कि **दलहन समाचार** किसानों और दलहन विकास कार्यकर्ताओं में लोकप्रिय होगा और देश में दलहन उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। इससे एक ओर किसानों की आय में वृद्धि होगी, मृदा की उर्वरता में वृद्धि होगी तथा दूसरी ओर देश में कुपोषण दूर होगा।

*Masood Ali*  
(मसऊद अली)

**सभी पाठकों को  
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें**

डा. मसऊद अली, निदेशक, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर-208 024 द्वारा प्रकाशित  
फोन : 0512-2570264, ई.पी.बी.ए.एक्स. - 0512-2572464, 2572465; फैक्स : 0512-2572582  
ई-मेल : root@iipr.ernet.in; वेबसाईट : http://www.iipr.res.in

मुद्रक : आर्मी प्रिंटिंग प्रेस, 33, नेहरू मार्ग, सदर कैंन्ट, लखनऊ-226 002. फोन : 0522-2481164, 6565333